13.5.2020

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा भाग-1

पाठ :- 'चन्द्रगुप्त' नाटक की कथावस्तु पर विचार।

छात्र-छात्राओं!

'चन्द्रगुप्त' नाटककार जयशंकर प्रसाद एक बहु चर्चित नाटक है जिसमें ऐतिहासिक कथानक को आधार बनाकर आधुनिक युग की भारतीय तत्कालीन संवेदना को अभिव्यक्ति दी गई है। भारतीय राष्ट्रीय-भाव-धारा से ओत-प्रोत यह नाटक अपने सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा में तत्कालीन युग-बोध से ओत-प्रोत है। जयशंकर प्रसाद मूलतः कवि रहे हैं और अपने काव्य-ग्रंथों के आधार पर ही अलौकिक प्रतिष्ठा प्राप्त की है। कविता के क्षेत्र में प्रसाद जी की 'कामायनी' की दार्शनिक विचार-धारा तत्कालीन छायावादी ग्रंथों में महाकाव्यात्मक गरिमा से युक्त हो प्रतिष्ठित हुई है। वैसे साहित्य की विविध विधाओं में इनकी लेखनी चली है जिसमें कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, एकांकी सभी सन्निहित हैं। इन्होंने बारह नाटकों की रचना की है जिनमें 'चन्द्रगुप्त' (1931) एवं स्कन्दगुप्त (1922) दोनों भारतीय राष्ट्रीयता के भावों से ओत-प्रोत हैं। इनकी चर्चा भी राष्ट्रीयता के मूल्यों की रक्षा के कारण ही अधिक हुई है।

'चन्द्रगुप्त' चार अंकों का नाटक है जिनमें 46 दृश्य हैं। कथानक बहुत बड़ा है और इसमें अनेक पात्र हैं। कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि पात्रों की भीड़ है। सम्पूर्ण नाटक में तीन प्रमुख घटनाएँ हैं — अलकेन्द्र का आक्रमण, नंद वंश का उन्मूलन और सिकन्दर के सेनापति सिल्यूकस का पराभव। इन तीनों मूल घटनाओं का संगुम्फन इतने सौष्ठव के साथ किया गया है कि कथा वस्तु-विन्यास, कथा चरित्र-चित्रण का कथोपकथन सभी दिशाओं में नाटक सुगठित और सुसम्बद्ध प्रतीत होता है।

दरअसल नाटककार प्रसाद के इस नाटक चन्द्रगुप्त की रचना उस समय हुई थी जिस समय भारत अंग्रेजी परतंत्रता से मुक्ति के लिए महात्मा गाँधी के नेतृत्व में आन्दोलित हो उठा था। ऐसा कहा जा सकता है कि जो काम महात्मा गाँधी राजनीतिक मंच से कर रहे थे वही काम प्रसाद जी अपने ऐतिहासिक नाटक 'चन्द्रगुप्त' के माध्यम से कर रहे थे। नाटक के कथानक में जो मूल घटनाएँ हैं वे विदेशी आक्रांता (सिकन्दर) के भारत आगमन और एक-एक करके देश के बँटे हुए राज्यों को जीतने एवं भारत पर अपना साम्राज्य स्थापित करने से जुड़ी हुई हैं। यही स्थिति व्यापारी अंग्रेजों से लेकर उनके भारत में साम्राज्य स्थापित करने तक की घटनाएँ रही हैं, इसलिए राष्ट्रीयता के भावों को बुलन्द करनेवाला यह नाटक लोकप्रिय हो गया। यह कथानक का एक पक्ष है।

कथानक का दूसरा पक्ष नाटक के विरुद्ध चला जाता है, वह यह कि उपर्युक्त कथानक की प्रस्तुति के लिए प्रसाद जी ने अपनी प्रतिष्ठित नाट्य-शैली ही ~~अपनायी~~ अपनायी है जिसमें मूल कथानक के साथ अनेक प्रासंगिक कथानकों का निर्माण होता है। एक ही कथा में अनेक कथाओं का सूत्र गुम्फित होने के कारण एक तो कथानक बहुत बड़ा हो गया है जिसमें प्रासंगिक कथानकों की बाढ़ आ गयी है। साथ ही गीतों की संख्या ~~का~~ बहुत हो गयी है, जिसमें दो तीन गीतों को छोड़कर शेष कविता ही है। कथानक का विस्तार आदि के कारण इनके जीवन-काल में ही इनके नाटकों पर आरोप लगे थे कि ये नाटक अभिनेय नहीं हैं। चार अंकों का नाटक अपने अंक में बहुत दृश्य संजोये है। यह अलग बात है कि प्रसाद जी के अपने ऊपर लगे आरोपों के उत्तर दिये थे कि विकसित रंगमंच हो तो इसका अभिनय किया जा सकता है। इसपर विशेष चर्चा अगली कक्षा में होगी।

(मेघा शर्मा)
13.5.20